"काठ का शहर"

किसी खामोश सी नज़र के किनारों पे बह रही कुछ बूँदों का हवाला है,
खातिर जिसके यूँ काठ की नुमायांदगी करती हवाओं और सरगोशियों की
आहट में काबिज शहरों की गलियों का अंदाज़ा लगाने ये काफ़िर मन
अपनी कुछ पुरानी यादों के सहारे एक सैर सापाते की ओर निकल पड़ा है|
कुछ चाहत, मुहब्बत, इंसानियत और अपनेपन की अनोखी दस्तानों को
समेटे एक इंसान की असीम खुशियों की कल्पना उढेले ऐसी लकीर खींची है
तो कहीं ऐसी खुद्दारी भर रातें भी शामिल हैं फ़िज़ाओं में जहाँ अपने रंग ओढ़े
जिंदगी आईना दिखाने की आरजू लिए खड़ी हो जैसे...

काठ का शहर...

"मेरी दास्ताँ का जिक्र जब जब शब्दों में उकेरा
हर एक शय पे मात का जश्न मना हो जैसे
तू हर लम्हा मेरी सलामती पे फ़िकरे कसता रहा
मेरी सरफरोशी तमन्नाओं पे धुआँ सा हो जैसे...."

शहर

इस शहर की शाम का आलम बड़ा अजीब है
राहें कितनी दूर हैं पर मंज़ील मेरे करीब है

शहर...

हमने देखी हैं जलती लाशें लोगों की
यहाँ जलते हैं जिंदा दिल मुर्दे खुशनसीब हैं
रोती आँखों को देखा है टूटती साँसें देखी हैं
यहाँ रोते हैं हंसते लोग खुश बाहौत रकीब हैं
टूटती हैं शाखें तब मुरझाते फूलों को देखा है
पल-पल रुकती हर धड़कन को हमने देखा है
यहाँ मारी इंसानियत दिल बड़े ग़रीब हैं
इस शहर की..

<u>शहर</u>...

मरती चाहत देखी है ख्वाब टूटते देखे हैं
हर पल मिलते सुख पल भर में जाते देखे हैं
खिलते ख्वाब इस शहर में बनते महलों को देखा है
खुशियों वाली गलियाँ यहाँ बदनसीब हैं...
इस शहर की...

<u>शहर</u>...

लफ़्ज अल्फ़ाज़ बन पाए कुछ मशक्कत और बांकी है

मेरे शब्दों का रियाज़ कुछ और बांकी है

परिंदों को बाहर तक लाने की कुछ साजिशें और बांकी है

जज्बातों में कुछ साँसें और बाकी हैं

शहर ये काठ का हो तो चला है

बस "काठ का शहर" होने में कुछ और बांकी है...

<u>शहर</u>...

सेहरो सुबह भी अब तो काठ की हो चली

बस 'काठ का शहर' होने में कुछ वक़्त और बांकी है...

<u>मंथन</u>

मुझे आज भी ठीक दस साल पहले का अपना दोस्त रमेश याद है जिसने एक रोज सिगरेट की डिब्बी से खेलते हुए अंजाने यूँ ही कह दिया था - "मेरा कारवाँ भी अजीब दास्ताँ बन गया, एक अंजान मुहल्ले से शुरू हो कई शहर अपने कर गया.." और कब तक चलना होगा कब तक यूँ ही दौड़ना होगा, कई प्रश्न चीरते हुए एक अजीब सी बात कह गया...

मंथन...

"कौन सी ज़मीं अपनी कहूँ किसे अपना दरिया, कई मुहानों पे सोई हैं ये आँखें किसे काहु मेरा सपना..." ये मंथन है मेरे विचारों का, अंजाने सपनों का जो किसी फैले पर से टूट कर अंबर से धरा की ओर उतर रहे हैं जिन्हें न तो अब तक ज़मीं चूम पायी ना ही वो अंबर की चाहत का कोई कोना हो पाया...हवा की लहरों संग खिलखिलाता सपना...

मंथन...

चलते - चलते जीवन में जब राह हसीं वो आई थी
अपने विचलित मन को जब वो खुद भी रोक ना पायी थी
बंधन थे हम दूर खड़े थे पर चाहत का हर स्वर था पाया
गा रही थी धड़कन उस पल राग जो दिल को था भाया
उन गीतों की हर कड़ी में बस तेरा ही साया था
जब रूठी थी दुनियाँ हमसे साथ तुम्हे तब पाया था
हर-सू तेरी चाहत फैली अगणित खुशियाँ पायी थीं
जब तेरे इक स्वीकार पे हमने लाखों कस्में खाई थीं
चलते-चलते...

<u>मंथन</u>...

ढूंढ रहा मैं अब वो ग़ज़लें जिनमें बस तेरे ही स्वर हैं
उन कसमों की कस्में मुझको मीरा का वो कृष्ण अमर है
अमर है उनकी प्रेम कहानी मुरली की हर तान अमर है
नीलगगन से बड़ा वो एक पल उस पल की हर साँस अमर है
हम पे यकीं है दुनियाँ को अब, जब तुझको हुई रुसवाई है
हार जीत का पहना जब, किस्मत प्यार हार कर आई है
भटक रहा था ये पागल मन पर अब ना बदरी छायेगी
उन सुरों के संग ना कोई रचना मेरी जाएगी
चलते बढ़ते इस जीवन में वो राह कभी ना आएगी...

मंथन...

लगा अगन जो दिल से खेले वो सच्चा फनकार नहीं है
दे कर वादे कस्में तोड़े वो कोई प्यार नहीं है
नहीं है वो उस प्यार के काबिल जो पवित्रता का अपमान करे
घृणित करे रिश्तों को जो वो सच्चा यार नहीं है
जिस जहाँ सपनों का सम्मान नहीं है, उन राहों में कोई संसार नहीं है
नहीं है उस संसार की कीमत जिसमें प्यार नहीं है...

अजीब मशक्कत हैं साजिशें ख्वाहिशों की ए पीर
देख आज फिर तेरे मुहाने पे ला खड़ा किया
चल आज फिर से तेरी हाला हो जौन
तू मेरा प्याला बन ज़रा
फिर इन साज़िशों की इबादत पूरी कर
फिर से तू ख्वाजा हो ज़रा...

<u>परिंदा</u>

कई राजदार बोल पड़े मुहल्ले के, शहर पथरया सा लगता है अब

कितने परिंदे गिरे हैं यहाँ, काठ की निशानियाँ बयाँ कर रही "सब"...

<u>परिंदा</u>...

कुछ बातें जश ए आम की जाये
चलो कुछ उड़ानों की अब शाम की जाये
कितने तोहमत लगे अपने परों पर साक़िब
आज कुछ एक तो नीलम किए जाय
नन्हीं यादों की टोकरी से कुछ पल हाथ आये हैं
किसी पुराने आसमाँ को फिर आबाद किये जाएँ...

<u>परिंदा</u>...

बग़ावत मौसिकि बदस्तूर काबिज खुद पे लग रही
काफ़िर मुक़द्दर फिर कोई उड़ान लाया है
साँसें उस पार उड़ जाने में है मसरूफ़ सी लगती
चाहत जिंदगी ने ये नया सा रंग लाया है
कई परदे हैं मेरी परवाज़ के अगोश में सीमटे
न जाने किस खुदा ने ये घरोंदा फिर बसाया है...

<u>परिंदा</u>...

ना पर बदले ना आसमाँ कोई
खुदा बदले पर ख़ुदायी वो ही
मेरी आँखो में अब भी वो उड़ान बांकी है
ना जूसतजू बदली ना अरमां कोई
मुझ पर अब भी मेरी उड़ानों का वो उधार बांकी है
संसार के ताने बानो का बाज़ार बांकी है...

<u>परिंदा</u>...

मुझे कौन रोक पाया किस घरोंदे को अपना कहूँ
पथिक संसार का कैसे मैं मिट्टी को जहाँ कहूँ
मुझे क्या, तुम्हे भी एक रोज उड़ उस पार जाना है
पँच तत्वों की विलीनता इसका अंतिम ठिकाना है...

परिंदा...

इन नन्हें परों ने तो बस उड़ान माँगी थी
धरा से गगन तक एक छोटी छलान्ग माँगी थी
तुमने पल भर में इसे भी बदनाम कर डाला
हे मनुष्य तूने परिंदों को भी इंसान कर डाला
हे मनुष्य तूने....

स्याही बिकने से

हमें मालूम है सब्र क्या है और रज़ा क्या क्या है
बस एक आईना है हमारे तसव्वुर का...

<u>स्याही बिकने से</u>...

कुछ गीत रोटी के लिखे हमने
अपनी हुनर के माहिर थे हम
कुछ लिखे कुछ बिके, स्याही के सानी थे हम
आज फिर लिखने का पैगाम आया है
मेरे शब्दों का मुहल्ला बाजार को पसंद आया है
कलम लिखती रही तेरी बेअदब दास्ताँ मुहब्बत की
और इस खरीद फ़रोख़्त के सूबेदार थे हम
कुछ गीत रोटी के लिखे हमने, अपनी हुनर के माहिर थे हम..

स्याही बिकने से...

आज फिर किसी गली ने आवाज़ लगाई शब्दों को मेरे
मैनें फिर तेरी माँग का जिक्र किया धीरे से
वो फिर हल्की सी मुस्कुराहट आ पड़ी लबों पे जब
झुंझलाहट में हाथ हीलाती तस्वीर छपी सीने पे
वो जतन खुद को साबित करने का
वो कोशिश जो फिर नाकाम हुई धीरे से
वो तेरा आँचल हटाना सर से, वो माँग भारी सिंदूर रेखा
सदिया बीती महफ़िल को तेरे, कुछ तो तेरा अर्थ बता...

<u>स्याही बिकने से</u>...

झुकती तेरी आँखों को मैं, सह नहीं पाऊँगा जानम
दरिया के उस पार मिले गर, कुछ भी कह ना पाऊँगा जानम
तूने तो व्यर्थ कसमों से, लबों को अब तक जड़ रखा है
स्याही को बिकने से पर मैं, अब ना रोक पाऊँगा जानम...

"कश्ती"...

लोग कहते हैं शहरों में बसती है जिंदगानी हमने साँसे लेती गलियों को देखा है, समंदर सी मौज में लहराती हुसैन सागर सी नम आँखों को अपनी खुद्दारी पे हंसते यूँ देखा जैसे कभी सालों की बेड़ियों को तोड़कर आज मुहब्बत जवानी के मुहाने पे आ के बैठी ही हो और अचानक ही किसी मौज के फनकार ने उसकी किस्मत का फ़ैसला कुछ यूँ कर दिया की आज खुद्दारी ने उसकी नमक भारी आँखों से शुरू हो उस समंदर के पार मुहब्बत की मज़ार पे जा दम तोड़ दिया हो...

अगर किसी मुसाफिर को ये ज़िक्र समझने की गुज़ारिश हो तो उसे भी अपनी "कश्ती" इन नमकीन निगाहों से हो कर पीड़ित समंदर की छोर तक जाने की जहमत उठानी होगी..

"कश्ती"...

" किसी नमक भरी ज़हरीली नज़र का मसला था,

किश्तिया डूबती गयीं मुशायरे होते गये..."

"कश्ती"...

किसी ने एक रोज कागज की नाव बना कर थाम दी थी हाथों में, ना तो उसे डूबा सके पानी में ना ही जला पाने की हिमाकत थी हममें और इसी तरह बन गया ये नग्मा - " **कश्ती** "...

" **कश्ती** "...

राहें बदल रही हैं मंज़िल का पता नहीं
रास्ते चल रहे हैं राही रुका नहीं
दिखी मंज़िल तो मंज़र छूट गये
सपने जो देखे हमने पल में बिखर गये
बिसरी यादों के सहारे दिल कभी संभलता नहीं
शाख पर मन की वो परिंदा अब ठहरता नहीं...

" **कश्ती** "...

खोया है मैनें क्या, क्या पाया वो पन्छी
रोका क्यूँ मैनें उसको उड़ान थी जिसकी बहुत उँची
उपर उठ ना सका उसे फिर रोक ना सका
पल भर ठहरता हूँ फिर से सोचता हूँ
शायद मिल जाए वो आहट फिर से कहीं
राहें बदल रही हैं...

" **कश्ती** "...

जिंदा हूँ जीने के लिए जीवन का पता नहीं
साथी जो मिला मिलकर भी मिला नहीं
खुशियाँ जो पलभर में समेटी थी हमने
हथेलियों से वो रेत फिसली है यहीं कहीं
पाया जो निशाँ तेरे उन खुशियों की रेत पे
फिर जा के हक़ीकत बयाँ हुई
रेत पे अक्सर पैरों के निशान होते हैं
दिल से उनका कोई रिश्ता नहीं
राहें बदल रही हैं...

" **कश्ती** "...

याद हो ना हो आपको वो कागज की कश्ती
पल भर में मेज पे बैठे हुए जब लिख दी गयी थी हमारी हस्ती
आज भी इस पार मैं उसके बैठे हुए सोचता हूँ
बार - बार क्यूँ..? आख़िर क्यूँ मैं तुझे खोजता हूँ

" **कश्ती** "...

जानता हूँ बीच में एक दीवार है बड़ी
और नाव हमारी वक़्त के मझधार में पड़ी
चलो वक़्त को कुछ और वक़्त दे के देखते हैं
अपनी तमन्नाओं को और गहराते देखते हैं
देख लें हम निर्णयों को भावना से खेलते
और देख लें ज़रा हम रोज मरते ये रिश्ते
अधिकार के बंधन में अब तुझे रखना नहीं
प्यार जो ये प्यार था वो प्यार मेरा था नहीं
राहें बदल रही हैं...

पुकार

कुछ धीमी साँसों की गुज़ारिश पे, मुझपर मेरा ही ऐतवार खो रहा है जैसे पुकार रहा हो कोई आगोश की खातिर और मन बावरा तड़पने को मजबूर हो रहा है| मेरे अपने गीतों का मकाम कुछ यूँ गुजर रहा हो जैसे काई चीखों का कारवाँ एक पथराई खामोशी के मुहल्ले से हो किसी अंजानी चाहत के दरिया में मिल रहा हो...

<u>पुकार</u>...

वक़्त यूँ काबिज हो सकता है किसी तरन्नुम की किस्मत पे ऐसा कहते सुना था सड़क किनारे किसी फकीर को, आज अफ़सोस है उसे पागल कहने पे...शायद अब भी वक़्त का कुछ किनारा बांकी हो, शायद तू मेरी इबादत जाने, शायद वो फकीर फिर मिले किसी राह पर बड़बड़ाता हुआ कोई अनछुआ सा किस्सा, शायद फिर मुझे कोई जानी पहचानी **"पुकार"** मिले...

<u>पुकार</u>...

पुकार लो हमें कि वक़्त अभी गुजरा नहीं
प्यार का आँचल हाथों से अभी छूटा नहीं
पल-पल बिखरते इस रिश्ते की कसम
पुकार लो हमें की साथ अभी छूटा नहीं..

<u>पुकार</u>...

थाम कर साँसों को अपनी चाँद है तड़प रहा
चाँदनी बिखर रही इक तारा कहीं है खो रहा
वक़्त की मौज पर लूट रहा सारा जहाँ
मात की शह पर जा रहा क्यूँ कारवाँ
आलिंगन इस दिल का क्या धड़कन से कभी होगा नहीं
पुकार लो हमें...

<u>पुकार</u>...

इससे पहले कि शाम ये ढल ना जाए
पुकार लो हमें कि धड़कन कहीं रुक ना जाये
रुक ना जाये ये वादियाँ चाँद कहीं फिर छिप ना जाये
सावन की उस बूँद को अब ये चातक तरसे नहीं
पुकार लो हमें...

<u>पुकार</u>...

बीते लम्हों की याद में तेरे सपनों के साथ में
बहती जाएगी जिंदगी तू हो या ना हो साथ में
अर्थ इस सत्य का यही है, यही सत्य इस अर्थ का
रुकती नहीं है राहें मंज़िल मिलने की आस में
लो छोड़ दिया अब आँचल तुम्हारा, थाम लो खुशियाँ नयी
पुकारना था जिसे तुम्हे वो सनम हम थे नहीं
पुकार लो हमें...

चौद्वा चाँद

आज ऐसी चाँदनी पड़ रही साँसों पर जैसे सारा मान शीतलता के आख़िरी छोर पे जा पहुँचा हो..ऐसी रेखा खींची है तूने इस दास्ताँ की, मेरे एक छोर पे चाँदनी दूसरे पे चाँद जल रहे हैं यूँ खुद में और अंजाने बिंदुओं पे बिखर रहे हैं यूँ की शीतल सी आहों का सहारा लिए ना जाने कितने दिल मिल रहे हैं इनकी झुलसी हुई लकीरों के मुहाने पे...

चौद्वा चाँद...

न जाने कितनी सदियों से ये चाँद यूँ ही जल रहा होगा न जाने कितनी आहें इस तपन मे ठंडी हुयी होंगी न जाने क्यूँ अक्सर चाँदनी रातों में ही इस चाँद पे दया सी आ जाती है जब पूरी धरती पीली और ये बेचारा जलता सा दिखाई देता है मुझे...

<u>चौद्वा चाँद</u>...

अक्सर चाँदनी का जिक्र सुना है हमने तेरी बातों में, अक्सर तूने यूँ ही हँसी बिखेरी भी है काई बार, बस आज उस चाँद का ख़याल सा आ रहा है बरबस जिसे मैनें न जाने कितनी बार दरकिनार कर दिया तेरी नज़रों के आगे...

<u>चौदवा चाँद</u>...

खुद की गुज़ारिशें अब भी तेरा ज़िक्र करती हैं पर जलता चाँद अपनी ज़ुबानी कुछ और बयान करता है आज कल, अपना यार बना फिरता है संग अक्सर रातों में अब...

चौद्वा चाँद...

वो देखो कैसे जल रहा है चौद्वा चाँद
शायद कल पूनम की रात होगी
चूमेगी जब चाँदनी पूरी धरा को
फिर अधूरी रात होगी
होगा अधूरापन फिर से चाँद में
धरती की अधूरी प्यास होगी
आस होगी जब मिलन की तब अमावस रात होगी

<u>चौद्वा चाँद</u>...

वो देखो कैसे मिट रही नदियाँ की धारा
शायद सागर में अब तक प्यास होगी
मीटेगी सरिता जब लहरों से मिलकर
उस जहर में भी एक मिठास होगी
जब मिलेगी मौज में सागर की मस्ती
टूटेगी धारा पर उसे सागर मिलन की आस होगी

चौदवा चाँद...

वो देखो मिल रही कैसे है खुशियाँ हर घड़ी अब
शायद फिर गमों की बरसात होगी
बन रहे कैसे ये नग्मे जिंदगी में
न जाने अब ये किन सुरों के साथ होगी
हर ग़ज़ल को रहती है उनकी ही आस क्यूँ
आख़िर कब ये साँसें उन साँसों के साथ होंगी

<u>चौद्वा चाँद</u>...

जागकर सोचा तो धड़कने बोल उठी

निकल चलो सपनों के बाहर

इस सुबह के बाद भी एक शाम होगी

होगा संघर्ष बस जिंदगी में

हक़ीकत यही बस तेरे साथ होगी...

<u>ज़िक्र</u>...

कुछ ज़िक्र था कुछ फ़िकरे भी थे हमारे
बस फ़िक्र थी की किस्से थे हमारे
चर्चा कुछ आम थी शान-ए-मशक्कत की
यूँ ही कहाँ इतने पैरोकार थे हमारे

<u>ज़िक्र</u>...

मुश्किल थी कुछ राजदार थे हमारे

किसी की चोखट पे निशान थे हमारे

बड़ी शिद्दत थी मकाम ए बयाँ होने की

हुए भी पर उनसे जो दीवान-ए-ख़ास थे हमारे

<u>ज़िक्र</u>...

अब बस कुछ अल्फ़ाज़ हैं हमारे
जिनसे जिकर हैं और फ़िकरे भी हैं हमारे
बस फ़िक्र ये की ना हो कोई चर्चा,
ना हो कोई क़िस्से हमारे
कुछ ज़िक्र था थे कुछ फ़िकरे हमारे...

<u>वो जो रौशन</u>...

वो जो रौशन हुए बैठे हैं रुकसार से तेरे
कसम तुझको है ए सूरज मुझे वो चाँद ना कहना
नहीं करना मुझे महताब उस चाँदनी से तू
जला कर तुझको ओढ़ा जिसने है शीतल का ये गहना...

<u>वो जो रौशन</u>...

वो जो साहिल पे बैठे हैं लहरों की आस में
कसम मुझको ए सरिता तेरा वो दीदार नही करना
नहीं करना मुझे अब पार इन लहरों मौज से
तोड़े नदियों का जो आँगन सजाने खुद का एक सपना...

<u>वो जो रौशन</u>...

वो सुरमय नज़ारों से जो संगीन हैं तेरे
कसम तुझको तेरे साज़ की मुझे वो राग ना कहना
ना कर मुझे संगीत की उस लय में अब मदहोश
सरगम बन रही जहाँ, सर के गम का बसेरा...

आहट

वो आहट थी तेरी या ग़ज़ल वो कहीं थी

वो तूफ़ा सा था या वो साँसें थी मेरी

समंदर था वो या थे आँखों के झरने

वो दिल में हमारी थी धड़कन अधूरी

<u>आहट</u>...

आरज़ू की जो मूरत थी हमने मिटाई
उसे फिर बनाने क्यूँ फिर से तुम आये
बाखुदगी में खोया था मन जो ये काफ़िर
उसे फिर जगाने ए खुदा फिर क्यूँ आये

<u>आहट</u>...

रहमत ने तेरी उजाड़ा ये दामन
फिर से वो बादल अहसानों के छाये
यही है गर चाहत फिर से तुम्हारी
रहूँगा मैं तेरी ही गुरबत के साये

<u>आहट</u>...

इबादत से झुकती जहाँ थी निगाहें
वो मंदिर कहीं था या दरगाह थी मेरी
बहारों का निकला जहाँ से वो कारवाँ
वहाँ पे खड़ी थी मज़ारें जुनूं की

आहट...

वो बस एक पल था जो था साथ तेरा
ये बाते सदियों की जब यादें हैं तेरी
ये किस्से हैं सारे ये बातें पुरानी
अधूरे हैं वादे अधूरी वो कहानी
वो चाहत ना मेरी ना थी वो तुम्हारी
ये किस्से हैं सारे ये बातें पुरानी....

अ!लाप

इन शीशों की राहों में फिसले कितने राही हैं

कुछ जो अंजाने अपने हैं कितने टूटे सपने हैं

उन अंजान धुरों के साये संग में साथी अपने हैं

धीरे-धीरे टूट रहे जो छोटे-छोटे सपने हैं..

अ!लाप...

जब भी भटकी राहें मेरी मैं कितना संभला सा था
आज जब है मंज़िल आगे क्यूँ इतना भटका सा हूँ
पसरी यादों की फुलवारी सी खुद में क्यूँ सिमटा सा हूँ
मिले हैं जब परवाज़ पंखों को बंधन में क्यूँ जकड़ा सा हूँ..

अ!लाप...

जब सावन बरसा था दिल से तन कितना सूखा सा था
अब पतझड़ आगे है जबकि क्यूँ इतना भीगा सा हूँ
सारा मंज़र संवर रहा फिर क्यूँ इतना बिखरा सा हूँ
चमक रही पूनम की थाली क्यूँ मैं तब फीका सा हूँ..

अ!लाप...

जब शाखों पे बैठे थे पंछी मन उन्मुक्त गगन में था
अब अंबर में उड़ते सारे क्यूँ मैं तब धरा पर हूँ
साँसों की सरगम संग बहता जीवन की जड़ता में हूँ
बिखरे माला के हर मोती क्यूँ टूटे धागे सा हूँ...

इक और तमन्ना

इक और तमन्ना मचल पड़ी एक और तराना संवर गया
इस बार मुहब्बत नाम नही कुच्छ और फसाना रूठ गया
फिर चाक पर चढ़ गया जो संभल रहा था पागल मन
इक और लहर अब टूट रही एक और किनारा छूट गया

<u>इक और तमन्ना</u>...

इस जीत ने फिर से हरा दिया इस राह ने फिर से दगा दिया

उन बीती बातों ने फिर से छूटा दामन थमा दिया

केसर की डाली ने झटके फिर से कितने मासूम से कण

सोयी आँखों को आज कुछ सपनों ने फिर से जगा दिया

<u>इक और तमन्ना</u>...

आसां है ऐलान-ए-जंग ये मालूम है मुझको
फिर हारकर भी क्यूँ इतना सुकून पाता हूँ
सम्भल रहा हर पीने वाला, बच कर ए साकी
बिन जाम के ही तूने आज फिर से भटका दिया
खेल ये किस्मत का अब हिज्र बन बैठा
हमने भी इसे अब अपना नसीब बना लिया...

<u>वो एक गुलाब का फूल</u>

मैं एक दरिया हूँ दरिया को बस सोहराब लिखता हूँ
स्याही से परेशा यूँ ही दिल का हर हिसाब लिखता हूँ
कलियों ने कयामत की जिसे गुलिस्ताँ बनाने की
मैं उस सेहरा को तेरा हर वो एक गुलाब लिखता हूँ...

<u>वो एक गुलाब का फूल</u>...

नज़र को सादगी साँसों को बस महताब लिखता हूँ
कलम को जिंदगी शब्दों को एक मुकाम लिखता हूँ
मैं हंसता था मैं हंसता हूँ खुशी का रूप दिखता हूँ
कई पतझड़ छिपाये हर घड़ी शृंगार रचता हूँ
बस अब रुकता हूँ इन अधरों को अपनी शाम लिखता हूँ
इन लबों को आज मैं अपना वो एक गुलाब लिखता हूँ...

वो एक गुलाब का फूल...

ना कोई दोष ना शुबा किसी पुराने घरोंदे का
मैं अपनी इस ग़ज़ल को अपनी आज जान लिखता हूँ
रुक गयी कभी कलम जो खुद को कुंठित हो कहीं
तेरी इबादत को इसे एक नया अवतार लिखता हूँ
इन लबों को आज मैं अपना गुलाब लिखता हूँ...

<u>वो एक गुलाब का फ़ूल</u>...

मैं लिखता हूँ तो अक्सर सब भूल जाता हूँ
खुद की यादों में साकी यूँ ही खो जाता हूँ
तेरी ज़ुल्फो को अपनी एक नयी सी छाव लिखता हूँ
इन शब्दों से एक नयी पहचान लिखता हूँ
तेरे लबों को.....

<u>वो एक गुलाब का फूल</u>...

इकरार ऐसा की तुझपे हर सदी का सीमांत लिखता हूँ
हर जहाँ तेरा ही बस अधिकार लिखता हूँ
मैं एक वादा भी लिखता हूँ हमारी तहरीर लिखता हूँ
अगले हर जनम इस गुलाब का गुलिस्ताँ लिखता हूँ

<u>वो एक गुलाब का फूल</u>...

पारेशा पंखुरियाँ ना हो पाये किसी जनम
मैं काँटों को भी एक एतवार लिखता हूँ
तुझे तुझसे मिलाने का मैं आज सलाम लिखता हूँ
अगली हर सदी खुद को तेरा पहला निशान लिखता हूँ..
मैं तुझको तेरी साँसों को मेरा गुलाब लिखता हूँ
इन लबों को आज मैं अपना वो एक गुलाब लिखता हूँ...

<u>कटु सत्य...१</u>

आँच साँसों की बाबा से मर्म खून माँ का मिला
पँच तात्विक रूप ये इन दो तत्वों से ही खिला
लाली आँखों में सूरज सी रूप सागर सा मिला
अगणित खुशियाँ तारों सी विस्तार अंबर सा मिला
पाया सब इस बीज ने पर माली को था क्या मिला
सींचा दूध से इसको पर खुद जो ताप मे जला...

<u>कटु सत्य...१</u>

थामें आँचल ममता का बढ़ रही लताये उपर
संग छाव परवरिश की आसमाँ छुने को तत्पर
बढ़ रही वो जिंदगी नये जीवन के अवतार में
अम्मा-बाबा के प्यार में उनके दामन की छाव में
नये रूप में बीज को मिल गया एक रूपांतर
इतने सुखों के बाद भी क्यूँ रोती है ममता अक्सर?
बढ़ने पर लताओं ने आधार को ही क्यूँ छला?
क्या मिला उस बाग़बाँ को जिसमें था वो फूल खिला...?

<u>कटु सत्य...२</u>

सूरज की किरणों से तेज को उधार लिए
चल पड़े छितिज में जीत का ये कारवाँ
साथ में बस लालिमा हो मंज़िल के द्वार की ओर
पीछे छूटे दिल की वो हार वाली कालिमा..

<u>कटु सत्य...२</u>

टूट जाय मित वाली सारी कस्में भी आज
खिला रहे शोर्य वाली कलियों का बागबाँ
डॅग-डॅग पग-पग भटक ना रही अब
तुझपे टिका है बूढ़े बाप का वो आशियाँ..

<u>कटु सत्य...२</u>

गढ़ा जिस बीज को वो माँ रही पुकार तुझे
माँग रही खुदा से वो तेरी खुशियों का जहाँ
बूढ़े हाथों वाली रोटियों के टुकड़ो का स्वाद
अब तक मूर्ख तुझे क्यूँ नहीं पता चला..

<u>कटु सत्य...२</u>

की टूट गया घट ममता का जिस घड़ी तब
याद करोगे तुम बूढ़े गालों की वो झुर्रियाँ
व्यर्थ होगा रोना अपने ही किस्मत पे तब
ढूँद्ते रहोगे वो दुवाओं वाली गलियाँ...

बादल

छा रही है कारी बदरी वो कोरा मन सा बहक रहा है
प्यास बुझाने धरा की देखो पागलपन में तड़प रहा है
महक रही है वादी सारी वो दर-दर क्यूँ फिर भटक रहा है
देकर खुशियों की आहट सबको वो खुद में ही अब सिमट रहा है
कल-कल करती झीलों का आँचल उसके मिलन को तरस रहा है
तरस रहा वो बादल खुद भी स्वयं ही मिटने गरज रहा है
थामें सतरंगी दामन देखो कैसे अब वो बरस रहा है
देकर अमृत वर्षा सबको अपनी अगन में सुलग रहा है
जानी पीड़ा सब नें अपनी उसे ना कोई समझ रहा है
लूटा के जग सारा वो देखो खुशी से कैसे घूम रहा है...

<u>सोच</u>

कुछ खामोश आवाज़ें सुनाई देती हैं
मुझे अब हर रोज कई चीखें दिखाई देती हैं
किसी का मका तो किसी का संसार उजड़ रहा है
खुश हूँ पत्थरों की पूजा नहीं की मैनें
आज माँ भारती का आंचल मैला दिखाई दे रहा है

<u>सोच</u>..

कब तक अपना दामन बचाऊँ मैं

बाबा कैसे तुमको समझाऊँ मैं

बचपन में भैया जैसा सपना देते

मुझे मेरे पंखों को परवाज़ देते

साँसों का उधार नहीं चाहिए था

काश उन्मुक्त गगन का किनारा देते

कर सकते गर वो अक्षुण्ण पहल

आज तुम भी इन जैसे तमाशबीन ना होते...

<u>सोच</u>..

क्या फिर कोई नया सवेरा हो पाएगा

पुरुषार्थ कभी संस्कार समझ पाएगा

संस्कृति का आडंबर कब तक यूँ चलता रहे

कोई कृष्ण फिर किसी द्रौपदी को बचाएगा

हर युग में दामिनी आएगी

कभी सीता कभी सावित्री तो कभी द्रौपदी चिल्लाएगी

समाज का ये स्वयंवर यूँ ही चलता रहेगा

कभी किसी माँ तो कभी किसी बहन का आँचल उजड़ता रहेगा

<u>सोच</u>..

आज भी दामिनी पुकार रही है, एक प्रश्न हम पे छोड़ जा रही है

इतनी मुश्किलें ना बढ़ा खुदा

जिंदगी अता करने वाली कोख,

आज बेटा पैदा करने से घबरा रही है...

मैं चलता रहा तू जलता रहा

मैं चलता रहा तू जलता रहा

कुछ ख़ास नहीं था जीने मैं, कुछ ख़ास नहीं था जीने में

पर मैं चलता रहा तू जलता रहा,पर मैं चलता रहा तू जलता रहा

मैं चलता रहा बस चलता रहा

दर हैं दीवारों पे साये भी हैं, दर हैं दीवारों पे साये भी हैं

दर हैं दीवारों पे साये भी हैं..

मैं डरता रहा पर मैं चलता रहा

मैं डरता रहा फिर भी चलता रहा, यूँ डरते हुए भी चलता रहा

मैं चलता रहा बस मैं चलता रहा

मैं चलता रहा तू जलता रहा...

तेरे शहर का जाम उठाए हुए, हम सहराओं तक छा ही गये

तेरे शहर का जाम...

जो छाये तो फिर बदनाम हुआ

तेरे इश्क में कितना नाम हुआ, तेरे इश्क..

देख मैं फिर बदनाम हुआ

तेरे इशक में कितना नाम हुआ, तेरे इशक में कितना नाम हुआ

देख मैं फिर बदनाम हुआ

कुछ साँस तो तुझपे भी भारी सी थी, कुछ साँस तो..

कुछ साँस तो तुझपे भी भारी सी थी, कुछ साँस तो..

फिर भी लेता रहा मैं चलता रहा

फिर भी लेता रहा...

मैं चलता रहा बस मैं चलता रहा, मैं चलता..

मैं चलता रहा तू जलता रहा...

एक फिर से इबादत हो जाए, एक फिर से ...

एक फिर से..

मेरा मौला कहीं फिर मिल जाए, मेरा मौला कहीं..

मेरा मौला कहीं .. मेरा मौला.. एक फिर से..

मैं तेरी हाला बन जाऊँ, मैं तेरी..

मैं तेरी हाला बन जाऊँ, मैं तेरी..

तू मेरा प्याला बन जाए...एक फिर से इबादत..

तू मेरा प्याला...

मेरा मौला कहीं फिर मिल जाए..

<u>मेरा कुछ वहाँ बांकी है...</u>

तेरी आँखों की मदहोशी मेरी साँसों का आलम है
तू यूँ ही चल पड़ा फिर भी रातों में शामिल है..

मुहब्बत ही नहीं तुझपे इबादत भी लुटाई थी
महज नज़रों के साहिल पे कभी सदिया बिताई थी
मुसलसल याद हो तुझको महज बातों में खो जाना
वो बिखरी रेत पे साझा ख़यालों का सिमट जाना
वो बस यादें थी यादों का घरोंदा अब भी कायम है...

ना अब कोई गिला तुझसे ना अब कोई जुनूँ साकी
मेरा बस कुछ वहाँ बांकी तेरा बस कुछ यहाँ बांकी
वो सब जो साथ लाया था हर एक गम खो रहा हूँ मैं
तेरे हँसने में रोने में हर एक पल जी रहा हूँ मैं
जमाने भर के क़िस्से ये, ना कोई और हासिल है..
तेरी आँखों की मदहोशी...

<u>शुक्रिया...</u>

तूफ़ा से डर कर कभी कारवाँ पार नहीं होता
साथ आप ना होते ये "सहर" आसाँ ना होता
बूँद-बूँद सागर भरा सिंधू धरा फिर मिल गयी
आपने दिखाई राह मंज़ील हमें मिल गयी
साथ आपका मिला हुआ आसां ये सफ़र
सफलता मिली यूँ जब आपने दिखाई डगर
है खुशी ऐसी मिली की शुक्रिया कैसे करूँ
ए खुदा रहमत है तेरी काँटों से फिर क्यूँ डरूँ
शुक्रिया मेरे खुदा शुक्रिया सब का
मिले जो राह मे अब तक मुझे..
हूँ जिनकी भी दुआ में शुक्रिया हर बंदे का..

||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||